Tehqeeqi Pamphlet No. 6

शबे मेराज नालैन अर्श पर

عبد مصطفی

AM ABDE MUSTAFA

ABOUT US

Abde Mustafa Official, a team from Ahle Sunnat Wa Jama'at
Our motto : Serving Quraano Sunnat, preaching Ilme Deen and to reform people.

This team came into existence in the year 2012 and in very few years this team did a lot of acts.
There is also a special place of Abde Mustafa Official on social media networking sites.

Lots of people from all over the world are connected to us via Facebook, WhatsApp, Instagram, Telegram, YouTube and Blogger.

Abde Mustafa Official

ABDE MUSTAFA OFFICIAL

abdemustafaofficial.blogspot.com

शबे मेराज नालैन अर्श पर

मेराज का वाक़िया बयान करते हुये ये भी बयान किया जाता है कि जब शबे मेराज हुज़ूर -ए- अकरम ﷺ अर्श पर पहुँचे तो आप अलैहिस्सलाम ने अपने नालैन उतारने चाहे कि आवाज़ आयी: ए हबीब! नालैन के साथ तशरीफ ले आइये ताकि अर्श को ज़ीनत व इज़्ज़त हासिल हो सके, फिर ये भी कहा जाता है कि हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम को वादी -ए- ऐमन में नालैन उतारने के हुक्म हुआ था जब कि रसूल -ए- अकरम ﷺ को मा नालैन बुलाया गया।

ये रिवायत सूफ़िया -ए- किराम के नज़दीक साबित है और मुहक़्क़िक़ीन के नज़दीक इस की कोई अस्ल नहीं है, हम यहाँ दोनों तरफ़ की आरा को नक़्ल करेंगे ताकी क़ार'ईन को हक़ीक़त मालूम हो सके।

मज़कूरा वाक़िये के मुतल्लिक़ इमामे अहले सुन्नत, आला हज़रत रहीमहुल्लाह त'आला लिखते हैं :

ये महज़ झूट और मौज़ू है।

(احکام شریعت، حصہ دوم، ص160)

मलफूज़ाते आला हज़रत में भी है कि ये रिवायत महज़ बातिल व मौज़ू है।

(ملفوظات اعلی حضرت، ص293)

जनाब मौलाना मुहम्मद आसिम रज़ा क़ादरी इस वाक़िये के मुतल्लिक़ लिखते हैं : तलाश के बावजूद फक़ीर की नज़र से कोई हदीस सहीह व

ज़ईफ नहीं गुज़री जिस में इस का सुबूत हो अलबत्ता "म'आरिजुन नबुव्वह" के सफ़हा नम्बर 114 पर है :

انگاہ جبریل ردای از نور در بر آنسرور صلی اللہ علیہ والہ وسلم افگند و نعلینی از زمرد پائے اودر آور (معراج النبوۃ)

यानी हज़रते जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने वक़्ते मेराज नूर की चादर नबी अलैहिस्सलाम को उढ़ा दी और आप के पाये अक़दस में ज़मर्जद पत्थर से बने हुये नालैन शरीफ़ पहना दिये। इस से मालूम हुआ कि हुज़ूर -ए- अकरम ﷺ मेराज शरीफ़ के लिये जो नालैन पाक पहन कर तशरीफ़ ले गये वो आम नालैन पाक ना था बल्कि मिनजानिब अल्लाह खास उस रात को आप के लिये भेजा गया था। मगर इस में भी वाज़ेह तौर पर नालैन शरीफ़ पहन कर अर्श पर जाना साबित नहीं लिहाज़ा इस के मुतल्लिक़ सुकूत बेहतर है। वल्लहू त'आला आलम।

(فتاوی بریلی شریف، ص352)

इस जवाब की तस्दीक़ करने के बाद क़ाज़ी मुहम्मद अबुल रहीम बस्तवी लिखते हैं कि आला हज़रत ने अहकाम -ए- शरीअ़त जिल्द दुवुम मे नालैन वाली रिवायत के मुतल्लिक़ फ़रमाया कि ये महज़ जूट और मौज़ू है और अल-मलफूज़ हिस्सा दौम में नालैन वाली रिवायत को बातिल व मौज़ू बताया है।

वल्लाहु त'आला आलम।

अल्लामा मुफ्ती शरीफुल हक़ अमजदी रहीमहुल्लाह मज़कूरा रिवायत के बारे में लिखते हैं :

नालैने मुक़द्दस पहने हुये अर्श पर जाना झूट और मौज़ू है। जैसा कि आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा ने इरफान -ए- शरीअ़त हिस्सा दुवुम में तहरीर फ़रमाया है।

(فتاوی شارح بخاری، ج1، ص306)

अल्लामा मुफ्ती शरीफुल हक़ अमजदी रहीमहुल्लाह से एक और सवाल किया गया कि ये बड़ी अजीब बात है कि आप ने इसे मौज़ू लिखा है हालाँकि अल्लामा अर्शदुल क़ादरी वा दीगर कई उलमा ने इसे तक़रीर में बयान किया है कि इस के अलावा ये कुतुब में भी मौजूद है।
आप ने जवाब में इरशाद फ़रमाया कि इस रिवायत के झूट और मौज़ू होने के लिये यही काफ़ी है कि किसी हदीस की मुअतबर किताब में ये रिवायत बयान करते हैं कि नालैने पाक पहने अर्श पर गये, उन से पूछिये कि कहाँ लिखा है। वल्लाहू त'आला आलम (और) अल्लामा अर्शदुल क़ादरी मद्दज़िल्लहुल आली ने ये कभी नहीं बयान किया होगा।

(ایضاً، ص307)

इसी रिवायत के मुतल्लिक़ अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद इस्माईल हुसैन नूरानी लिखते हैं :
बाज़ सूफिया -ए- किराम के नज़दीक ये रिवायत साबित और दुरुस्त है। चुनाँचे क़ुरआने करीम की आयत

انی انا ربک فاخلع نعلیک

के तहत तफ़सीर करते हुये अल्लामा इस्माईल हक़्की अलैहिर्रहमा ने रूहुल बयान, जिल्द 6 में बाज़ाब्ता इस रिवाय को तहरीर फ़रमाया है

लेकिन उलमा -ए- मुहक़्क़िक़ीन और मुहद्दिसीन ने इस रिवायत को बिल्कुल बे-अस्ल और बातिल क़रार दिया है। चुनाँचे अल्लामा यूसुफ नब्हानी अलैहिर्रहमा फरमाते हैं :

قد سئل القزويني عن وطئه صلى الله عليه واله وسلم العرش بنعله وقول الرب " تقدس: لقد شرفت العرش بذلك يا محمد، هل له أصل أم لا؟ فاجاب بما نصه: اما حديث وطئ النبي صلى الله عليه وسلم العرش بنعله فليس بصحيح ولا ثابت(إلى قوله)

وكتب بعض المحدثين بعد كلام القزويني المذكور ما ذكره القزويني هو الصواب وقد وردت قصة الاسراء والمعراج عن نحو اربعين صحابيا ليس في حديث احد منهم انه عليه الصلوة والسلام كان في رجليه تلك الليلة

نعل(جواهر البحار، ج3، ص499،500)

यानी इमाम क़ज़्वैनी से हुज़ूर अलैहिस्सलाम के अर्श पर नालैन लेकर तशरीफ ले जाने और अल्लाह तबारक व त'आला के इस फरमान "ए मुहम्मद (ﷺ) आप ने (नालैन) के ज़रिये अर्श को शर्फ बख्शा है" के बारे में पूछा गया कि क्या इसकी कोई अस्ल है या नहीं?

तो आप ने जवाब दिया कि जहाँ तक हुज़ूर ﷺ के अर्श पर नालैन ले कर तशरीफ ले जाने का ताल्लुक़ है तो ये गलत है और गैरे साबित है। बाज़ मुहद्दिसीन ने इमाम क़ज़्वैनी के इस जवाब के बारे में लिखा है कि यही दुरुस्त है। और (ये बात भी क़ाबिले गौर है कि) मेराज शरीफ़ का वाक़िया तक़रीबन चालीस सहाबा -ए- किराम से मरवी है लेकिन इन में

से किसी की भी रिवायत में ये वारिद नहीं कि इस रात हुज़ूर ﷺ के पाऊँ में नालैन थे।
मज़कूरा इबारत से मालूम हुआ कि तहरीर कर्दा रिवायत की कोई अस्ल नहीं। आला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा खान ने भी अहकाम -ए- शरीअ़त, सफ़हा 166 में इस रिवायत को मौज़ू और गलत क़रार दिया है। बहार -ए- शरीअ़त में सदरुश्शरिया, अल्लामा अमजद अली आज़मी लिखते हैं ये मशहूर है कि शबे मेराज हुज़ूर -ए- अकरम ﷺ नालैन मुबारक पहने हुये अर्श पर गये और वायिज़ीन इस मुतल्लिक़ एक और रिवायत बयान करते हैं, उस का सबूत नहीं और ये भी साबित नहीं कि बरहना पा थे। लिहाज़ा इस के मुतल्लिक़ सुकूत करना मुनासिब है। (बहार -ए- शरीअ़त, हिस्सा 16, सफ़हा 165)
वल्लाहु त'आला आलम

(انوار الفتاوی، ص190،191)

हज़रते अल्लामा नूर बक्श तव्कुली अलैहिर्रहमा नालैन का नक्शा बयान करते हुये लिखते है :
ये वही नालैन शरीफैन हैं कि शबे मेराज जब हुज़ूर -ए- अकरम ﷺ अर्श पर तशरीफ ले गये तो बा-क़ौले सूफिया -ए- किराम बारी त'आला का इरशाद हुआ कि नालैन समेत अर्श को शर्फ बख्शें। किसी ने खूब कहा :

لدی الطور موسی نودی اخلع واحمد

علی العرش لم یوذن بخلع نعاله

यानी तूर के पास हज़रते मूसा को आवाज़ आयी कि पा पोश उतार लीजिये और हज़रते अहमद को अर्श पर पा पोश उतारने की इजाज़त ना मिली।

(سیرت رسول عربی، ص283)

सदरुश्शरिया, अल्लामा अमजद अली आज़मी अलैहिर्रहमा लिखते हैं : ये मशहूर है कि शबे मेराज हुज़ूर -ए- अकरम ﷺ नालैन मुबारक पहने हुये अर्श पर गये और वायिज़ीन इस मुतल्लिक़ एक और रिवायत बयान करते हैं, उस का सबूत नहीं और ये भी साबित नहीं कि बरहना पा थे। लिहाज़ा इस के मुतल्लिक़ सुकूत करना मुनासिब है।

(بہار شریعت، حصہ16، مجالس خیر، ایصال ثواب کا بیان، ص645)

अल्लामा मुफ्ती फैज़ अहमद ओवैसी रहीमहुल्लाह ने इस हवाले से एक मुस्तक़िल रिसाला बनाम "नालैन अर्श पर" तहरीर फ़रमाया है। इस रिसाले का निस्फ से ज़्यादा हिस्सा नालैन की फज़ीलत और मेराज के अहवाल पर मुश्तमिल है। उस में इस रिवायत को साबित करने के लिये तफ़सीरे रूहुल बयान और जवाहिरुल बिहार की इबारत को नक़्ल किया गया है और हम भी जवाहिरुल बिहात की एक इबारत नक़्ल कर चुके हैं जिस से इस वाक़िये की नफ़ी होती है।

हासिले कलाम ये है कि मज़कूरा वाक़िया मुहक़्क़िक़ीन के नज़दीक मौज़ू है और इस का बयान करना दुरुस्त नहीं है जब कि बाज़ सूफिया -ए- किराम ने इसे नक़्ल किया है। तफ़सीरे रूहुल बयान और दीगर कुतुबे तफासीर का हाल अहले इल्म पर अयाँ है। इन किताबों में अजीबो गरीब

बल्कि ऐसी रिवायात भी मौजूद हैं जो अक़ाइदे अहले सुन्नत के मुतसादिम हैं लिहाज़ा महज़ इन कुतुब में किसी रिवायत का होना उस के सहीह होने के लिये काफ़ी नहीं है जब तक कि वो किसी मुअतबर किताब में ना पायी जायें या जब तक उस की तायीद में अक़वाल ना मिल जायें। मज़ीद ये कि सूफिया की कुतुब में भी हदीस के नाम पर ऐसी कई रिवायात देखने को मिलती हैं जो मुहद्दिसीन व मुहक़्क़िक़ीन के नज़दीक हदीस कहलाने के भी क़ाबिल नहीं होती। बताना ये मक़सद है कि उलमा -ए- मुहक़्क़िक़ीन का मौक़िफ ही यहाँ दुरुस्त है कि ऐसी कोई रिवायत नहीं है और हम अल्लामा अम्जद अली आज़मी रहिमहुल्लाह की इस इबारत पर गुफ्तगू को खत्म करते हैं कि "इस का सबूत नहीं और ये भी साबित नहीं कि बरहना पा थे लिहाज़ा इस के मुतल्लिक़ सुकूत करना मुनासिब है।

अब्दे मुस्तफ़ा

OUR OTHER PAMPHLETS